

कॉलोनियल दासता

कॉलोनियल युग (1600-1900) के दौरान, यूरोपीय शासन के तहत, अमेरिका, अफ्रीका और एशिया के कुछ हिस्सों को कॉलोनी बना लिया गया था या व्यापारिक पोस्ट्स के रूप में इस्तेमाल किया गया था। लाखों महिलाओं, पुरुषों और बच्चों को गुलाम बनाया गया था और अफ्रीका और एशिया से दूरदराज स्थानों पर भेज दिया गया था। वे, उनके बच्चे, और उसके बाद आने वाली कई पीढ़ियों को एक ऐसी व्यवस्था के अधीन किया गया जिसने उनकी त्वचा के रंग, या उनके विश्वास के आधार पर उन्हें अमानवीय और विषयाश्रित बनाया।

डच ईस्ट इंडिया कंपनी (VOC) और डच वेस्ट इंडिया कंपनी (WIC) ने कॉलोनियल दास व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। VOC ने अपनी गतिविधियों को दक्षिणी अफ्रीका और एशिया, पश्चिम अफ्रीका पर WIC, कैरिबियन और उत्तरी और दक्षिण अमेरिका पर केंद्रित किया। दोनों व्यापारिक कंपनियां निजी और राज्य की पूंजी के साथ स्थापित की गईं, और उनका अधिकार आंशिक रूप से सरकारी था। कुल मिलाकर, नीदरलैंड ने दस लाख से अधिक लोगों को गुलाम बनाया और बेचा गया। उन्हें बागानों पर, घरों में, कारीगरों और खानों में काम करने के लिए ले जाया जाता था, या उत्पादों या सैन्य अभियानों के परिवहन में नियोजित किया जाता था।

कॉलोनियल दासता एक वैध व्यवस्था थी जिसमें मनुष्य को व्यापार योग्य संपत्ति में बदल दिया गया था। इस रूप की दासता को 19वीं शताब्दी के दौरान समाप्त कर दिया गया था। तब से लगातार अंतरराष्ट्रीय घोषणाओं में दासता को मानवता के खिलाफ अपराध के रूप में परिभाषित किया गया था, हाल ही में 2001 में नस्लवाद, नस्लीय भेदभाव, ज़ेनोफोबिया और संबंधित असहिष्णुता के खिलाफ विश्व सम्मेलन के दौरान भी। फिर भी, इस व्यवस्था के निशान दुनिया भर के समाजों में मौजूद हैं। यह प्रदर्शनी इसके भीतर के व्यक्तियों की भूमिका और एजेंसी को देखकर गुलामी की व्यवस्था की गहरी समझ के लिए प्रयास करती है। इसका उद्देश्य एक सार्वभौमिक घटना के रूप में अन्याय और मानव अधिकारों के संरक्षण में व्यक्तियों की भूमिका के बारे में सवाल उठाना है।